



ISSN:3049-2017

IJMH 2024; 1(1): 40-43

© 2024 IJMH

www.themultijournal.com

Received: 09-04-2024

Accepted: 13-04-2024

Publish : 16-04-2024

Dr. Krishna PandaAssistant Professor,
BAPS Swaminarayan Sanskrit-
Mahavidyalay, Sarangpur

विभिन्न गृह्यसूत्रों के अनुसार विवाह संस्कार

Dr. Krishna Panda

भूमिका

विवाह संस्कार हिंदू धर्म के सोलह संस्कारों (षोडश संस्कार) में से एक अत्यंत महत्वपूर्ण संस्कार है। यह न केवल सामाजिक और नैतिक दायित्वों का प्रतीक है, बल्कि धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। विवाह संस्कार का उल्लेख विभिन्न गृह्यसूत्रों में भिन्न-भिन्न विधियों और मंत्रों के साथ किया गया है। यह शोधपत्र विभिन्न गृह्यसूत्रों के अनुसार विवाह संस्कार की विधि, महत्व, तथा उसके धार्मिक एवं सामाजिक प्रभावों पर प्रकाश डालता है।

गृह्यसूत्रों की संक्षिप्त भूमिका

गृह्यसूत्र स्मृति साहित्य का एक महत्वपूर्ण भाग है, जो वैदिक काल से संबंधित वैवाहिक, धार्मिक एवं सामाजिक विधियों का संकलन करता है। गृह्यसूत्रों में वर्णित विधियाँ वैदिक अनुष्ठानों पर आधारित होती हैं और इन्हें अलग-अलग ऋषियों द्वारा संकलित किया गया है। प्रमुख गृह्यसूत्र निम्नलिखित हैं:

1. आश्वलायन गृह्यसूत्र
2. शांखायन गृह्यसूत्र
3. पारस्कर गृह्यसूत्र
4. बौधायन गृह्यसूत्र
5. हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र
6. गोभिल गृह्यसूत्र
7. आपस्तंब गृह्यसूत्र
8. काठक गृह्यसूत्र

इन गृह्यसूत्रों में विवाह संस्कार की विभिन्न प्रक्रियाओं और विधियों का विस्तृत वर्णन मिलता है।

विवाह संस्कार की विधि विभिन्न गृह्यसूत्रों के अनुसार

1. आश्वलायन गृह्यसूत्र

आश्वलायन गृह्यसूत्र में विवाह प्रक्रिया का विस्तृत वर्णन किया गया है। इसमें कन्यादान को विवाह की मूल प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया गया है, जहाँ पिता कन्या को वर को सौंपता है। विवाह संस्कार के प्रमुख अंग पाणिग्रहण (वर द्वारा वधू का हाथ पकड़ना) और सप्तपदी (सात पग लेना) अनिवार्य माने गए हैं, जो विवाह की पुष्टि करते हैं।

इसके अतिरिक्त, अग्निहोत्र और होम का विधान दिया गया है, जिससे विवाह धार्मिक एवं आध्यात्मिक रूप से संपन्न होता है। वर-वधू के लिए विशेष व्रतों का उल्लेख किया गया है, जो विवाह से पूर्व उनकी मानसिक और शारीरिक शुद्धि के लिए आवश्यक माने गए हैं। यह गृह्यसूत्र विवाह को केवल सामाजिक बंधन न मानकर एक पवित्र यज्ञ के रूप में देखता है।

विवाह संस्कार की विधि में आश्वलायन गृह्यसूत्र की विशेषता

Correspondence:**Dr. Krishna Panda**Assistant Professor,
BAPS Swaminarayan Sanskrit-
Mahavidyalay, Sarangpur

- विवाह की प्रक्रिया 'कन्यादान' पर आधारित है।
- 'पाणिग्रहण' और 'सप्तपदी' अनिवार्य माने गए हैं।
- 'अग्नि होत्र' तथा 'होम' करने का विधान है।
- वर-वधू के लिए विशेष व्रत का उल्लेख किया गया है।

2. शांखायन गृह्यसूत्र

शांखायन गृह्यसूत्र में विवाह संबंधी विस्तृत विधानों का उल्लेख किया गया है। इसमें गंधर्व विवाह एवं ब्राह्मण विवाह को विशेष महत्त्व दिया गया है। गंधर्व विवाह प्रेम और स्वीकृति पर आधारित होता है, जबकि ब्राह्मण विवाह में वर पक्ष द्वारा योग्य कन्या से विवाह हेतु धर्मानुसार प्रस्ताव किया जाता है।

विवाह से पूर्व वर-परिक्षण की परंपरा का उल्लेख मिलता है, जिसमें वर के शारीरिक, मानसिक, एवं चारित्रिक गुणों का परीक्षण किया जाता था, ताकि वह विवाह के योग्य सिद्ध हो सके। सप्तपदी को विवाह की अनिवार्य प्रक्रिया माना गया है और इसके प्रत्येक चरण के लिए विशेष मंत्रों का विधान किया गया है। ये मंत्र विवाह के विभिन्न उद्देश्यों, जैसे—धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष की प्राप्ति के लिए उच्चारित किए जाते हैं। इससे विवाह को केवल लौकिक बंधन नहीं, बल्कि एक धार्मिक और आध्यात्मिक अनुष्ठान के रूप में स्थापित किया गया है।

विवाह संस्कार की विधि में शांखायन गृह्यसूत्र की विशेषता

- विवाह में 'गंधर्व विवाह' एवं 'ब्राह्मण विवाह' की महत्ता दी गई है।
- विवाह से पूर्व 'वर-परिक्षण' की परंपरा का उल्लेख मिलता है।
- सप्तपदी के प्रत्येक चरण के लिए विशेष मंत्रों का विधान है।

3. पारस्कर गृह्यसूत्र

पारस्कर गृह्यसूत्र में विवाह संस्कार को अत्यंत पवित्र और वैदिक विधियों पर आधारित बताया गया है। इसमें अग्नि स्थापन (विवाह के लिए विशेष रूप से अग्नि का प्रबंध) और अग्नि प्रज्वलन (विवाह संस्कार के दौरान अग्नि का प्रज्वलित किया जाना) को अनिवार्य माना गया है, जिससे विवाह एक यज्ञीय अनुष्ठान का स्वरूप लेता है।

विवाह की विधि में वर-वधू द्वारा अग्नि के चारों ओर परिक्रमा (फेरों) करने का विधान है, जिससे अग्नि साक्षी रूप में उनका पवित्र बंधन स्थापित करता है।

सप्तपदी को विवाह की मूल प्रक्रिया माना गया है, और प्रत्येक चरण में विशेष वेद मंत्रों के उच्चारण की अनिवार्यता बताई गई है। ये मंत्र विवाह के आध्यात्मिक, सामाजिक, और सांसारिक उद्देश्यों को व्यक्त करते हैं, जिससे विवाह केवल लौकिक बंधन न रहकर वैदिक संस्कृति का एक अभिन्न अंग बन जाता है।

विवाह संस्कार की विधि में पारस्कर गृह्यसूत्र की विशेषता

- विवाह संस्कार में 'अग्नि स्थापन' तथा 'अग्नि प्रज्वलन' की परंपरा अनिवार्य मानी गई है।

- वर-वधू द्वारा अग्नि के चारों ओर 'परिक्रमा' करने का विधान है।
- सप्तपदी में प्रत्येक चरण पर विशेष वेद मंत्रों का उच्चारण अनिवार्य है।

4. बौधायन गृह्यसूत्र

बौधायन गृह्यसूत्र में विवाह संस्कार से संबंधित विभिन्न महत्त्वपूर्ण विधियों का उल्लेख किया गया है। इसमें विवाह से पूर्व वरयात्रा का विशेष महत्त्व बताया गया है, जिसमें वर अपने परिवार एवं संबंधियों के साथ वधू के घर जाता है, और विवाह की प्रक्रिया विधिपूर्वक प्रारंभ होती है।

विवाह से पहले कन्या के कुंडली मिलान को आवश्यक शर्त माना गया है। इसमें वर और वधू के ग्रह-नक्षत्रों का मिलान किया जाता है, ताकि वैवाहिक जीवन शुभ, सुखी और संतुलित हो सके।

इस गृह्यसूत्र में प्रतिज्ञा होम का विशेष उल्लेख मिलता है, जिसमें विवाह के समय अग्नि के समक्ष वर-वधू विवाह की शपथ लेते हैं और वैदिक मंत्रों के उच्चारण के साथ पवित्र अग्नि में आहुति दी जाती है। यह संस्कार विवाह के धार्मिक और आध्यात्मिक पक्ष को दर्शाता है तथा इसे यज्ञीय प्रक्रिया के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

विवाह संस्कार की विधि में बौधायन गृह्यसूत्र की विशेषता

- विवाह के पहले 'वरयात्रा' का महत्त्व बताया गया है।
- कन्या के 'कुंडली मिलान' की प्रक्रिया को विवाह की एक आवश्यक शर्त माना गया है।
- इस गृह्यसूत्र में 'प्रतिज्ञा होम' का विशेष उल्लेख मिलता है।

5. हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र

हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र में विवाह संस्कार को वैदिक यज्ञीय परंपरा से जोड़ा गया है, जिससे यह केवल सामाजिक अनुबंध न होकर एक पवित्र धार्मिक अनुष्ठान बन जाता है। विवाह की प्रक्रिया यज्ञीय विधियों के अनुसार संपन्न होती है, जिसमें अग्नि देवता की उपस्थिति अनिवार्य मानी गई है।

इस गृह्यसूत्र में गंधर्व विवाह और दैव विवाह का वर्णन मिलता है। गंधर्व विवाह में वर-वधू की पारस्परिक स्वीकृति महत्त्वपूर्ण होती है, जबकि दैव विवाह में कन्या का दान किसी योग्य ब्राह्मण को यज्ञीय अनुष्ठान के अंतर्गत किया जाता है।

इसके अतिरिक्त, विवाह संस्कार के दौरान "आयुष्यमान् भव" जैसे आशीर्वादात्मक मंत्रों का विशेष उल्लेख मिलता है। इन मंत्रों के माध्यम से वर-वधू को दीर्घायु, समृद्धि, और सुखी दांपत्य जीवन का आशीर्वाद दिया जाता है, जिससे विवाह संस्कार केवल लौकिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक उन्नति का भी एक साधन बन जाता है।

विवाह संस्कार की विधि में हिरण्यकेशि गृह्यसूत्र की विशेषता

- विवाह संस्कार की विधि वैदिक यज्ञीय परंपरा से जुड़ी हुई है।
- इसमें 'गंधर्व विवाह' एवं 'दैव विवाह' का वर्णन मिलता है।

- 'आयुष्यमान् भव' जैसे आशीर्वादात्मक मंत्रों का विशेष उल्लेख है।

6. गोभिल गृह्यसूत्र

गोभिल गृह्यसूत्र में विवाह संस्कार को धार्मिक अनुष्ठानों से जोड़ा गया है, जिससे यह केवल एक सामाजिक अनुबंध न होकर एक वैदिक संस्कार के रूप में प्रतिष्ठित होता है। इसमें विवाह की प्रक्रिया वैदिक मंत्रों, यज्ञीय विधियों और धार्मिक अनुष्ठानों द्वारा संपन्न की जाती है।

विवाह के दौरान वर-वधू को गृहस्थ धर्म की शिक्षा देने का उल्लेख मिलता है। इसमें दांपत्य जीवन की मर्यादाएँ, कर्तव्य, तथा पारिवारिक और सामाजिक उत्तरदायित्वों को समझाने की परंपरा है, जिससे वे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर हो सकें।

इस गृह्यसूत्र में मधुपर्क एवं गृहप्रवेश विधियों का विशेष वर्णन किया गया है।

- मधुपर्क में वर को मधु (शहद) और अन्य मंगलकारी पदार्थों से युक्त अन्न अर्पित किया जाता है, जो स्वागत और सम्मान का प्रतीक है।
- गृहप्रवेश विधि में विवाह के बाद वधू का वर के गृह में प्रवेश धार्मिक अनुष्ठानों के साथ संपन्न होता है, जिससे दांपत्य जीवन की शुभ शुरुआत सुनिश्चित हो सके।

इस प्रकार, गोभिल गृह्यसूत्र विवाह को एक पवित्र और संस्कारित जीवन के प्रारंभ के रूप में प्रस्तुत करता है।

विवाह संस्कार की विधि में गोभिल गृह्यसूत्र की विशेषता

- विवाह संस्कार को धार्मिक अनुष्ठानों से जोड़ा गया है।
- वर-वधू को गृहस्थ धर्म की शिक्षा दी जाती है।
- विवाह में 'मधुपर्क' एवं 'गृहप्रवेश' विधि का विशेष वर्णन है।

7. आपस्तंब गृह्यसूत्र

आपस्तंब गृह्यसूत्र में विवाह संस्कार को अत्यंत पवित्र और धार्मिक अनुष्ठानों से युक्त बताया गया है। इसमें 'वर वरण' (वर का चयन) एवं 'कन्यादान' (कन्या को वर को सौंपने की विधि) को विशेष महत्त्व दिया गया है। कन्यादान को पिता द्वारा किए जाने वाले महान पुण्यकर्मों में से एक माना गया है। इस गृह्यसूत्र में 'अग्नि होम' और 'अश्मारोहण' विधियों का उल्लेख मिलता है।

अग्निहोम विवाह संस्कार के दौरान किया जाने वाला यज्ञीय अनुष्ठान है, जिसमें अग्नि को साक्षी मानकर आहुति दी जाती है। अश्मारोहण (पत्थर पर पांव रखने की विधि) में वधू को एक पत्थर पर खड़ा कर यह प्रतीकात्मक शिक्षा दी जाती है कि वह अपने दांपत्य जीवन में स्थिरता, धैर्य और दृढ़ता बनाए रखे। इसके

अतिरिक्त, वर-वधू को 'व्रत' एवं 'संस्कार' द्वारा शुद्ध किए जाने का प्रावधान है। विवाह से पहले वर-वधू को विभिन्न व्रतों और संस्कारों का पालन करना आवश्यक होता है, जिससे उनका शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शुद्धिकरण सुनिश्चित किया जा सके।

इस प्रकार, आपस्तंब गृह्यसूत्र विवाह को केवल एक सामाजिक बंधन न मानकर धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण मानता है।

विवाह संस्कार की विधि में आपस्तंब गृह्यसूत्र की विशेषता

- विवाह संस्कार में 'वर वरण' एवं 'कन्यादान' को विशेष महत्त्व दिया गया है।
- इसमें 'अग्नि होम' और 'अश्मारोहण' विधि का उल्लेख है।
- वर-वधू को 'व्रत' एवं 'संस्कार' द्वारा शुद्ध किए जाने का प्रावधान है।

8. काठक गृह्यसूत्र

काठक गृह्यसूत्र में विवाह संस्कार को वैदिक यज्ञीय परंपरा से जोड़ा गया है। इसमें विशेष रूप से 'दर्शपूर्णमास यज्ञ' का उल्लेख मिलता है, जो विवाह के दौरान संपन्न किया जाता है। यह यज्ञ चंद्रमा की अमावस्या (दर्श) और पूर्णिमा (पूर्णमास) के अवसर पर किया जाता है, जिससे वर-वधू का जीवन चंद्रमा की तरह शांत, समृद्ध और उज्वल बना रहे।

इस गृह्यसूत्र में वर-वधू के मानसिक एवं आध्यात्मिक शुद्धिकरण को अनिवार्य माना गया है। विवाह से पूर्व उन्हें विशेष व्रत, ध्यान, स्नान एवं संस्कारों के माध्यम से पवित्र किया जाता है, जिससे वे वैवाहिक जीवन के लिए शुद्ध और योग्य बन सकें।

सप्तपदी की प्रक्रिया में भी विशेष विधि का उल्लेख किया गया है, जिसमें प्रत्येक चरण पर विशेष आहुति देने का विधान है। इन आहुतियों के माध्यम से वैवाहिक जीवन में समृद्धि, धर्म, प्रेम, संतान, स्वास्थ्य और मोक्ष की प्रार्थना की जाती है। इस प्रकार, काठक गृह्यसूत्र विवाह को एक पवित्र यज्ञीय अनुष्ठान के रूप में देखता है, जिसमें धार्मिक विधियों और आध्यात्मिक शुद्धिकरण को विशेष महत्त्व दिया गया है।

विवाह संस्कार की विधि में काठक गृह्यसूत्र की विशेषता

- विवाह में 'दर्शपूर्णमास' यज्ञ का उल्लेख मिलता है।
- इसमें 'वर-वधू का मानसिक एवं आध्यात्मिक शुद्धिकरण आवश्यक बताया गया है।
- सप्तपदी में प्रत्येक चरण पर विशेष आहुति देने का विधान है।

विवाह संस्कार का धार्मिक एवं सामाजिक महत्त्व

1. धार्मिक महत्त्व

- विवाह संस्कार को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के लक्ष्य से जोड़ा गया है।

- यह गृहस्थ धर्म का आरंभ बिंदु है, जिससे व्यक्ति को सामाजिक एवं धार्मिक कर्तव्यों का पालन करने की प्रेरणा मिलती है।
- गृह्यसूत्रों में विवाह को पवित्र एवं दिव्य अनुष्ठान के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
- विवाह संस्कार को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के लक्ष्य से जोड़ा गया है।
- यह गृहस्थ धर्म का आरंभ बिंदु है, जिससे व्यक्ति को सामाजिक एवं धार्मिक कर्तव्यों का पालन करने की प्रेरणा मिलती है।
- गृह्यसूत्रों में विवाह को पवित्र एवं दिव्य अनुष्ठान के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

2. सामाजिक महत्त्व

विवाह केवल व्यक्तिगत संबंध नहीं, बल्कि समाज की आधारशिला है। यह पारिवारिक संरचना को सुदृढ़ करता है और सामाजिक जीवन में स्थिरता एवं संतुलन बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

• **पारिवारिक संरचना को मजबूत बनाना:** विवाह से परिवार की स्थापना होती है, जिससे समाज में नैतिकता, अनुशासन और मूल्यों का संचार होता है। यह संस्कार माता-पिता, संतान और अन्य पारिवारिक संबंधों की एक मर्यादित व्यवस्था सुनिश्चित करता है, जिससे सामाजिक ताने-बाने की सुरक्षा होती है।

• **सामाजिक उत्तरदायित्व एवं कर्तव्य:** विवाह केवल दो व्यक्तियों का नहीं, बल्कि दो परिवारों का मिलन होता है। इससे व्यक्ति को सामाजिक उत्तरदायित्वों और कर्तव्यों का बोध होता है, जैसे— परिवार का पालन-पोषण, वंश परंपरा को आगे बढ़ाना, बच्चों को संस्कारित करना और समाज के प्रति योगदान देना।

• **समाज में एकता एवं स्थिरता:** विवाह परिवारों के बीच संबंध स्थापित करता है, जिससे समाज में सामंजस्य और एकता बढ़ती है। यह विभिन्न समुदायों, जातियों और परिवारों को जोड़ने का माध्यम बनता है, जिससे समाज में सौहार्द्र और स्थिरता बनी रहती है।

विवाह केवल व्यक्तिगत जीवन का विषय नहीं, बल्कि सामाजिक संस्था है, जो रिश्तों की मर्यादा, कर्तव्यों की पूर्ति और समाज में एकता एवं सद्भाव बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह संस्कार समाज की निरंतरता, स्थायित्व और उन्नति का आधार है।

- विवाह समाज की आधारशिला है, जो पारिवारिक संरचना को मजबूत करता है।
- यह संस्कार सामाजिक उत्तरदायित्वों, कर्तव्यों एवं संबंधों की मर्यादा को सुनिश्चित करता है।

- विवाह से परिवारों के बीच संबंध स्थापित होते हैं, जिससे समाज में एकता एवं स्थिरता आती है।

निष्कर्ष

विवाह संस्कार विभिन्न गृह्यसूत्रों में विशेष महत्त्व रखता है और प्रत्येक गृह्यसूत्र में इसे अलग-अलग दृष्टिकोण से देखा गया है। कुछ गृह्यसूत्रों में इसे धार्मिक अनुष्ठान के रूप में प्रस्तुत किया गया है, तो कुछ में इसे सामाजिक और नैतिक कर्तव्यों से जोड़ा गया है। यद्यपि विधियों में भिन्नता हो सकती है, परंतु सभी गृह्यसूत्रों में विवाह को जीवन का एक अनिवार्य संस्कार माना गया है, जो व्यक्ति के आध्यात्मिक और सामाजिक उत्थान के लिए आवश्यक है।

संदर्भ

1. आचार्य अप्पय दीक्षित, "गृह्यसूत्र विमर्श"।
2. सत्यव्रत सामश्रमी, "हिंदू विवाह संस्कार का वैदिक विवेचन"।
3. मनुस्मृति, अध्याय 3
4. विभिन्न गृह्यसूत्रों का संकलन